आपने लिखा

प्रिय संपादक,

संदर्भ का छठवां अंक मिला। इससे पहले मार्च-अप्रैल का अंक भी मिला। लेकिन बीच के अंक न जाने कहां रह गए। इसमें कोई संदेह नहीं कि पत्रिका बेजोड़ है। यह न केवल वस्तुओं को सही ढंग से प्रस्तुत करती है बल्कि उन्हें समझने के लिए दृष्टि भी प्रदान करती है। मेरा बेटा पांच वर्ष का है लेकिन वह भी बहुत चाव से इसकी कहानियां सुनता है व चित्र देखता है।

दीपा, मकान नं. 749,
सेक्टर-1, रोहतक, हरियाणा

प्रिय संपादक,

सातवां अंक मिला। अजय शर्मा का लेख 'बिजली और आवेश' व बरट्रैण्ड आर. ब्रिनले की रचना (विज्ञान गल्प) 'डाइनोसौर का अंडा' हमारे शिक्षक समुदाय को काफी पसंद आए। हमने इन रचनाओं को कक्षा में भी पढ़कर सुनाया। लेकिन इस बात का अफसोस है कि हम पत्रिका की बाट देखते-देखते निराश हो जाते हैं। क्योंकि 'संदर्भ' हमें बहुत लेट मिलती है। पत्रिका जल्दी-से-जल्दी पहुंचाने की कोशिश कीजिए।

एम. एस. पवार, प्राचार्य
राजीव गांधी मेमोरियल हाई स्कूल
धावला, जिला बैतूल, म. प्र.

प्रिय संपादक,

संदर्भ की नियमित वाचक हूं। संदर्भ मई-जून 95 के अंक में दिशा कहानी पढ़ी। वह मुझे बेहद पसंद आई। मैं इसका गुजराती में अनुवाद करना चाहती हूं। मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि मुझे दिशा कहानी का गुजराती में अनुवाद करने की अनुमति दीजिए।

भावना पाठक
लोक विद्यालय, मायधार
जिला भावनगर, गुजरात

प्रिय संपादक,

संदर्भ का सातवां अंक पढ़ा। सुशील जोशी का लेख 'परमाणु भार की गुत्थी अणु-परमाणु भेद से सुलझी' ने उनके पिछले अंक में छपे लेख की गुत्थी सुलझाने का सराहनीय कार्य कर 'संदर्भ' का वज़न बढ़ाया है। इसके लिए सुशील भाई बधाई के पात्र हैं।

रश्मि पालीवाल का लेख निश्चय ही सामाजिक अध्ययन के अध्यापन के लिए एक प्रेरणादाई सोच का तरीका है। अजय शर्मा का लेख 'बिजली और आवेश' कई प्रश्नों का एक हल साबित हुआ। विज्ञान गल्प 'डाइनोसौर का अण्डा' काफी रोचक लगी। सवालीराम ने सिर खुजलाकर

अपनी और पाठकों की हालत खराब कर दी। कुछ लेख हल्के रहे लेकिन लगता है कि संदर्भ अब दिशा पकड़ती जा रही है।

एस. एन. साहू
शासकीय आर. एन. ए. स्कूल
पिपरिया, जिला होशंगाबाद, म. प्र.

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का छठवां अंक पढ़ा। उस अंक में इब्ने इंशा की किताब के अंश पढ़े। आप इब्ने इंशा की किताब के अंश देकर अच्छा करते हैं। इंशा उर्दू के शीर्ष स्तर के व्यंगकार हैं। संदर्भ के छठवें अंक में पेज 80 पर छपी रचना 'एक सबक जुगराफिये का' में एक वाक्य है – "पुराने ज़माने में ज़मीन गुल मोहम्मद की तरह साकिन होती थी।" यहां हाशिए में गुल मोहम्मद को कश्मीर का भूतपूर्व मुख्य मंत्री बताया गया है। जबकि रचना में गुल मोहम्मद से मुराद फारसी का मुहावरा है जो इस प्रकार है, "फलक जुंबद न जुंबद गुल मोहम्मद" यानी आसमान तो हरकत कर सकता है मगर गुल मोहम्मद अपनी जगह से नहीं हिल सकते।

'संदर्भ' के लिए बस इतना ही कह सकता हूं कि – अल्लाह करे जोरे शबाब और ज़्यादा।

ए. एन. कुरेशी (व्याख्याता)
डाईट, शाजापुर, म. प्र.

इनामगांव – उठे कुछ सवाल

प्रिय संपादक,

सातवें अंक में इनामगांव के बारे में लेख 'खोद निकाला एक गांव' पढ़ा। बस मज़ा आ गया। और पढ़ने की तलब हो रही है। कई जगह संकेतों को विस्तार से पढ़ने की इच्छा भी हो रही है। कई प्रश्न भी सूझ रहे हैं। सबसे पहला तो यही कि सूखा मौसम होते जाने की क्या वजहें रही होंगी? इसमें मेरी गहरी रुचि है।

बर्तन-भांडों पर चित्रों का क्रमशः कम होते चले जाना.... उन्हें किस कदर उदासी घेरती होगी न अपने आसपास की कम होती जाती दुनिया में, इसका अंदाज़ा तो हम सब को है ही अपने आसपास के अनुभवों की बदौलत।

एक और जिज्ञासा – क्या इस बात का कोई प्रमाण मिलता है कि कम पानी की स्थिति से जूझने के लिए उन्होंने कृषि के ढंग में कोई बदलाव किया? पैर काटकर लाश दफनाने की वजह मालूम हुई? इसके पीछे ज़रूर कोई पेचीदा कहानी होगी, शायद प्रेतों की चहल-कदमी रोकने के लिए ऐसा करते होंगे? और मुखिया परिवार के अपने लोग मृतकों से डरते नहीं होंगे?

बढ़िया लेख के लिए फिर से स्नेह।

तेजी ग्रोवर, 'प्रेमचंद पीठ'
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म. प्र.

प्रिय संपादक,

मैं 11वीं कक्षा का विद्यार्थी हूं। मैंने 'संदर्भ' को पढ़ा तो मुझे ऐसा लगा कि मैं इस प्रकार की और किताबों का अध्ययन करूं। मैंने फाइनमेन वाला लेख पढ़ा।

इस लेख में मुझे वह घटना काफी अच्छी लगी जिसमें उन्होंने ब्राज़ील की कक्षा को पढ़ाया। जिस प्रकार लड़के सिर्फ परिभाषाएं रट लेते हैं लेकिन समझ नहीं पाते, ऐसी ही समस्या हमारे यहां के स्कूलों में भी है।

मैं सोचता हूं कि यदि ऐसी कोई किताब मिल जाए जिसमें प्रयोगों के साथ पाठ समझाए गए हों तो हमारे यहां के लड़कों का भी जीवन बन सकता है। क्या फाइनमेन की लिखी किताबें मिल सकती हैं? मुझे ऐसा लगता है कि उनकी किताबों को पढ़कर मैं यहां की शिक्षा में कुछ कर सकता हूं।

प्रमोद कुमार, ग्राम नथुआ,
फिरोज़ाबाद, उ. प्र.

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का सातवां अंक पढ़ा। बेशक, वैज्ञानिक विषयों पर सचित्र लेख अत्यंत उत्कृष्ट हैं। दैनिक जीवन में उपयोगी फोटो कॉपी मशीन की कार्य प्रणाली सरल भाषा में दी गई है।

इसी प्रकार आप आगे भी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस्तेमाल होने वाली चीज़ों के बारे में समय-समय पर बताते रहें। छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। लेकिन इसके लिए यह छात्रों

संयुक्तांक क्यों.....

प्रिय पाठक,

संदर्भ के दूसरे अंक से जो शुरुआत हुई देरी होने की तो गाड़ी लगातार पिछड़ती ही गई। उसके बाद के पांच-छह अंकों के दौरान काफी कोशिश की कि थोड़ा-थोड़ा कम समय लेकर यह फासला खत्म कर दें – परंतु हर बार दो महीने से थोड़ा ज़्यादा ही समय लग जाता है।

तो हमने तय किया कि अब सिर्फ एक ही ज़रिया है कि नवम्बर-दिसम्बर 1995 और जनवरी-फरवरी 1996 को एक ही साथ संयुक्तांक के रूप में निकाल कर इस फासले को खत्म कर लें। इस तरह ये अंक नवम्बर 95 से फरवरी 96 का है। गलती हमारी है, अगले अंक आपको समय पर पहुंचाने की पूरी कोशिश होगी हमारी तरफ से।

हां, इसी के साथ एक बात और। संदर्भ की वार्षिक सदस्यता से मतलब छह अंक मिलने से है। तो सदस्यों को पूरे छह अंक ही मिलेंगे। उनके लिए यह अंक एक ही गिना जाएगा।

एक बार फिर, गलती हमारी है माफ कीजिएगा।

सपादक मंडल

को आसानी से मिल सके यह भी ज़रूरी है।

राकेश मोहन त्रिपाठी, व्याख्याता,
कुनकुरी, रायगढ़, म. प्र.

प्रिय संपादक,

आज के दौर में पत्रिकाओं की सबसे बड़ी समस्या है पत्रिका का ग्राहकों तक नहीं पहुंच पाना। पाठक जब अपना पैसा खर्च करता है तो वह यह भी चाहता है कि पत्रिका उसे नियमित रूप से मिले। अब चाहे प्रकाशक की वजह से या डाक व्यवस्था की गड़बड़ी की वजह से पत्रिका पाठकों तक नहीं पहुंच पाती है तो पाठक की रुचि भी धीरे-धीरे खत्म होने लगती है। जैसे उदाहरण के लिए संदर्भ पत्रिका को ही लें। मुझे इसके शुरू के सिर्फ दो अंक ही मिल सके हैं शेष अंक नहीं। ऐसे में कौन पत्रिका मंगाना चाहेगा? यह बात आप बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

अयोध्या प्रसाद पाण्डेय
के. एफ. आई. रूरल स्कूल
राजघाट फोर्ट, वाराणसी, उ. प्र.

प्रिय संपादक,

सातवें अंक में प्रकाशित 'जब हैंडपंप बिगड़े तो' पसंद आया। ग्रामीण क्षेत्रों में आजकल हालत है कि जानकारी के अभाव में नलकूप बिगड़े रहते हैं। ऐसे ही जानकारी आगे भी देंगे, अपेक्षा है।

'सात अजूबे' की फेहरिस्त देखकर मैं खुद आश्चर्य में पड़ गया। लेख वास्तव में अजूबा लगा। मनोहर नोतानी बधाई के पात्र हैं।

चम्पालाल कुशवाहा,
हिरनखेड़ा, होशंगाबाद

संदर्भ

सजिल्द

संदर्भ सजिल्द। संदर्भ के पहले छह अंकों का सजिल्द संस्करण। पहले छह अंकों में प्रकाशित सामग्री का विषयवार इंडेक्स संस्करण के साथ है। इस संस्करण का मूल्य 60 रुपए (डाक खर्च सहित) है। राशि कृपया डिमांड ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें। ड्राफ्ट एकलव्य के नाम से बनवाएं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

एकलव्य
कोठी बाज़ार
होशंगाबाद – 461 001

एकलव्य
ई-1/25, अरेरा कॉलोनी
भोपाल – 462 016